शेख़ फ़रीद - सबद २९

भिजउ सिजउ क्मबली अलह वरसउ मेहु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

भिजउ सिजउ क्मबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥२५॥

सार: सच्चा साधक वह है जो ऐसे मार्ग पर चलता है जो केवल शर्तहीन प्रेम से नहीं बल्कि परिवर्तनकारी प्रेम से परिभाषित होता है। यह यात्रा सत्य और समस्त सृष्टि में प्रवाहित एकता के सार के प्रति एक सच्चे समर्पण के रूप में भीतर से शुरू होती है । यह साधक को जड़ से जुड़े रहने के लिए बाध्य करती है तब भी जब संसार विचलन या प्रतिरोध प्रस्तुत करे। इस प्रतिबद्धता में साधक का परिवर्तन किसी नए व्यक्ति में नहीं बल्कि एक सच्चे व्यक्ति में होता है।

भिजउ सिजउ क्मबली अलह वरसउ मेहु ॥
जब सर्वव्यापी ऊर्जा वर्षा करे तो मेरा कम्बल पूरी तरह से गीला होकर भीग जाऐ अर्थात् सर्वव्यापी एकता के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक, भले ही इसके साथ कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ आयें।

जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥२५॥
यदि मैं अपने प्रिय मित्रों से मिल सकूँ तब यह प्रेम कभी नहीं टूटेगा, जिसका अर्थ है कि सद्गुणों को अपनाकर हम एकता में टूटने की संभावना को समाप्त कर देते हैं। (२५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद परिणामों की परवाह किए बिना पूरे दिल से एकता को अपनाने की बात कहते हैं। उनके शब्द साहसपूर्ण संवेदनशीलता से गूंजते हैं, प्रेम का एक ऐसा रूप जो अपने पथ पर अडिग रहता है। उनका शाश्वत संदेश यह बताता है कि जब आंतरिक आत्मा सत्य के साथ जुड़ जाती है तो तूफ़ान भी बंधन को कमज़ोर नहीं कर सकते बल्कि समर्पण के माध्यम से यह मज़बूत होता है। यह

दोहा पिछले दोहे की दुविधा का समाधान प्रस्तुत करता है जहां प्रेम और असुविधा के बीच द्वंद्व था, अब वही असुविधा साहसिक समर्पण से हल हो जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com